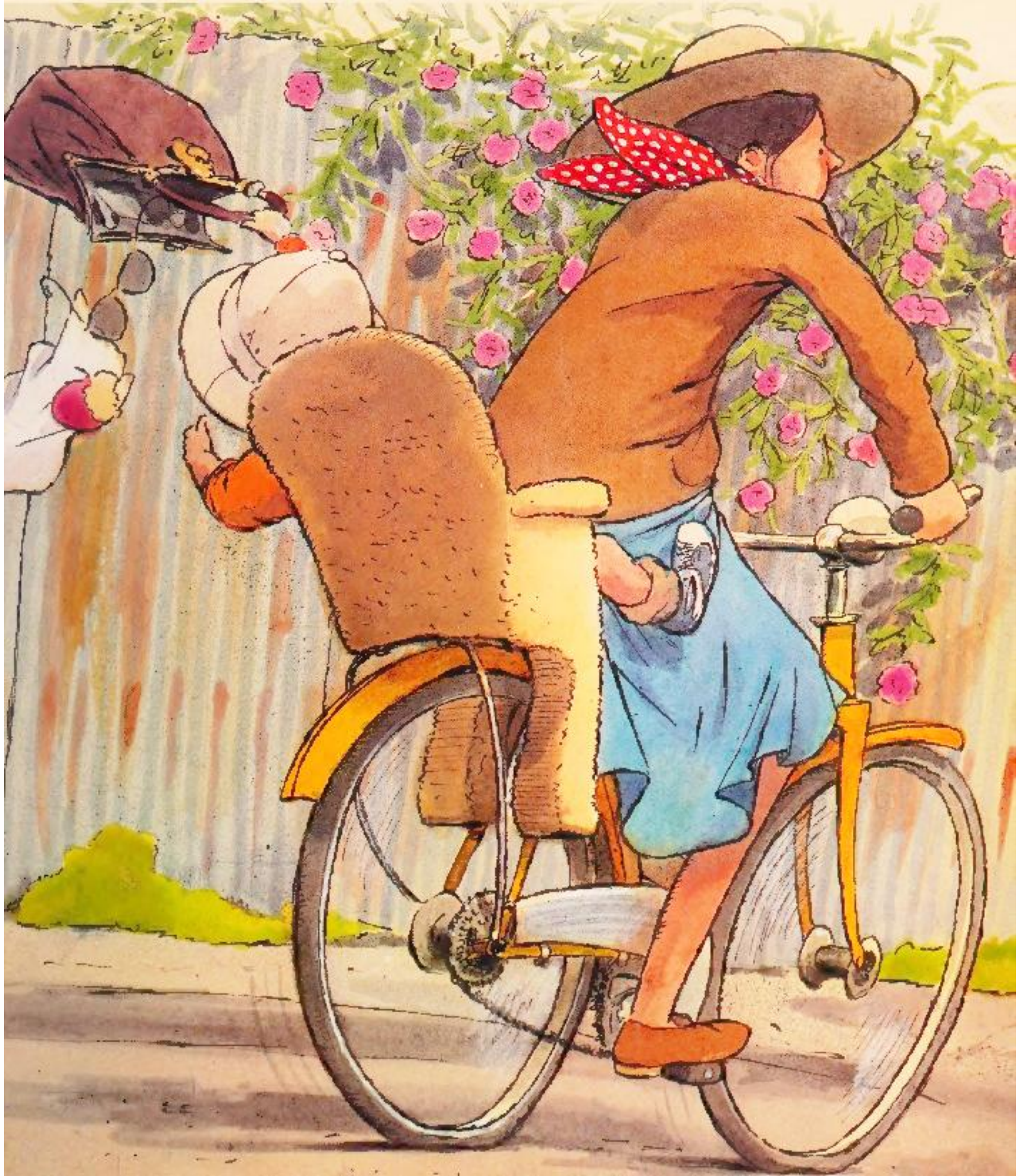
शरारती डेविड

लेखिका: सैली फैरेल ऑजर्स, चित्रकार: क्रेग स्मिथ
हिन्दी: आरती जैन



शरारती डेविड समय के लिए अपनी दादी के घर रहने गया। उसकी माँ उसे वहाँ छोड़कर खुश थी, क्योंकि डेविड बहुत शरारती था।

यहीं से शुरू होती है डेविड के जीवन के एक दिन की यह मज़ेदार और शरारतों से भरी कहानी।

डेविड इतना नटखट लड़का है कि उसकी माँ और दादी दोनों परेशान हो जाती हैं।

वह दादाजी की शेविंग क्रीम से खेलता है और टॉयलेट में टिश्यू रोल बहा देता है।

धैर्यवान दादी बढ़ती चिंता के साथ यह सब देखती रहती हैं।

केवल तब, जब डेविड सो जाता है, दादी चैन की मुस्कान मुस्कुरा पाती हैं।

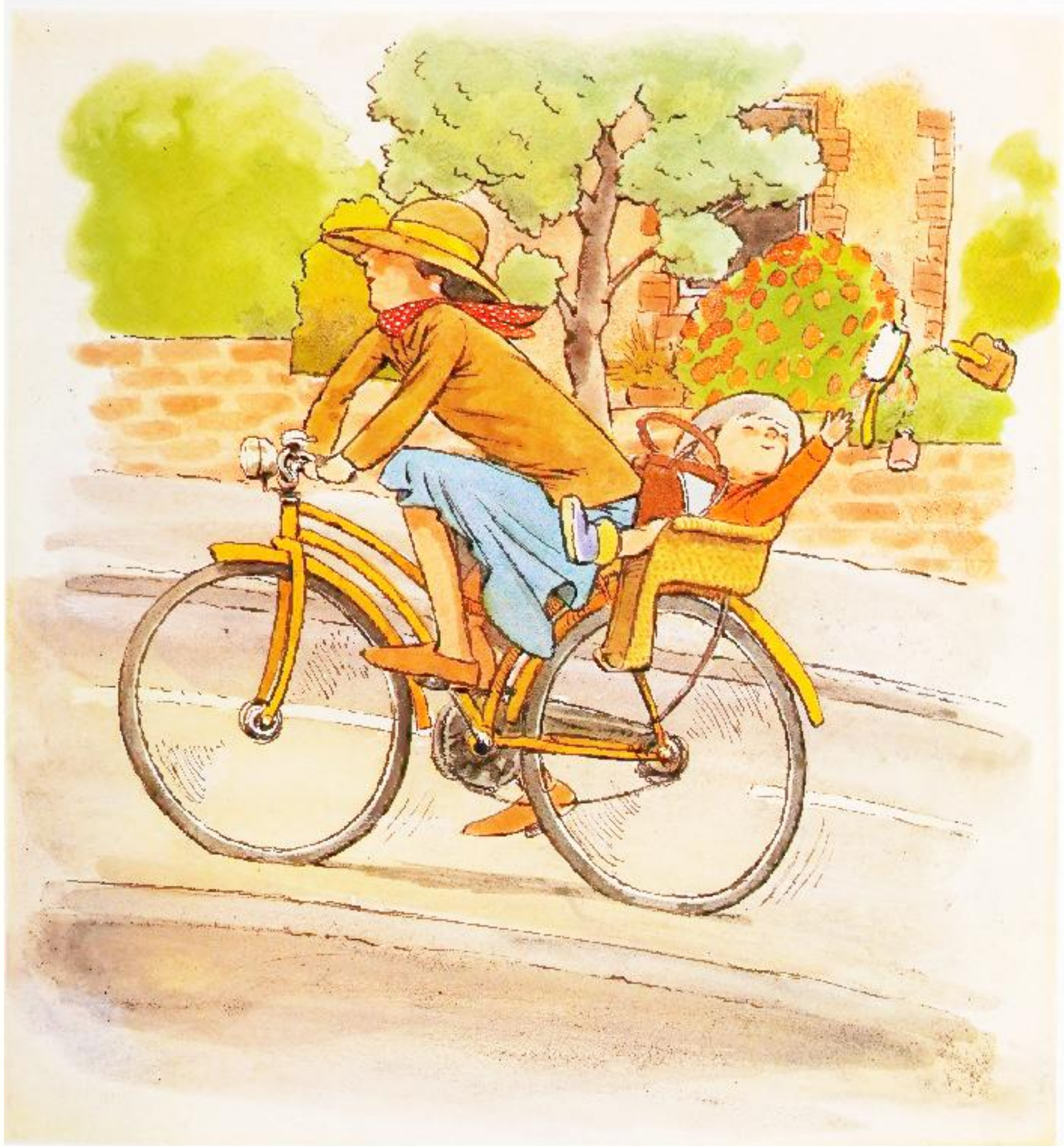
शरारती डेविड



लेखिका: सैली फैरेल ऑजर्स

चित्रकार: क्रेग स्मिथ

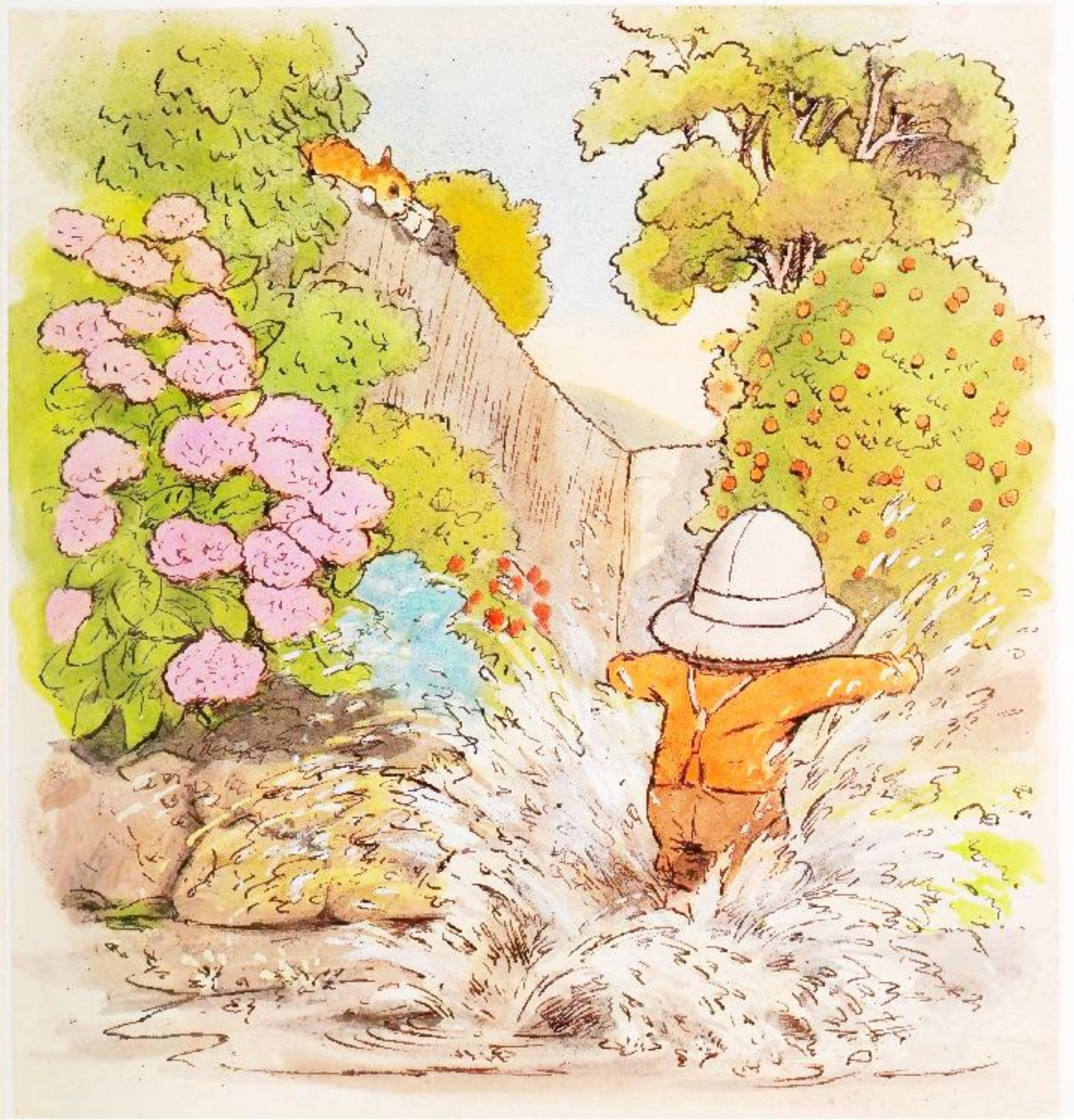
हिन्दी: आरती जैन



शरारती डेविड रहने गया
कुछ समय के लिए अपनी दादी के पास,
उसकी माँ उसे वहाँ छोड़कर खुश थी,
क्योंकि डेविड था बहुत बड़ा सिरदर्द।



डेविड ने
सभी बिल्लियों की पूँछ खींची,
चाहे वे धारीदार हों,
काली हों या सफेद।



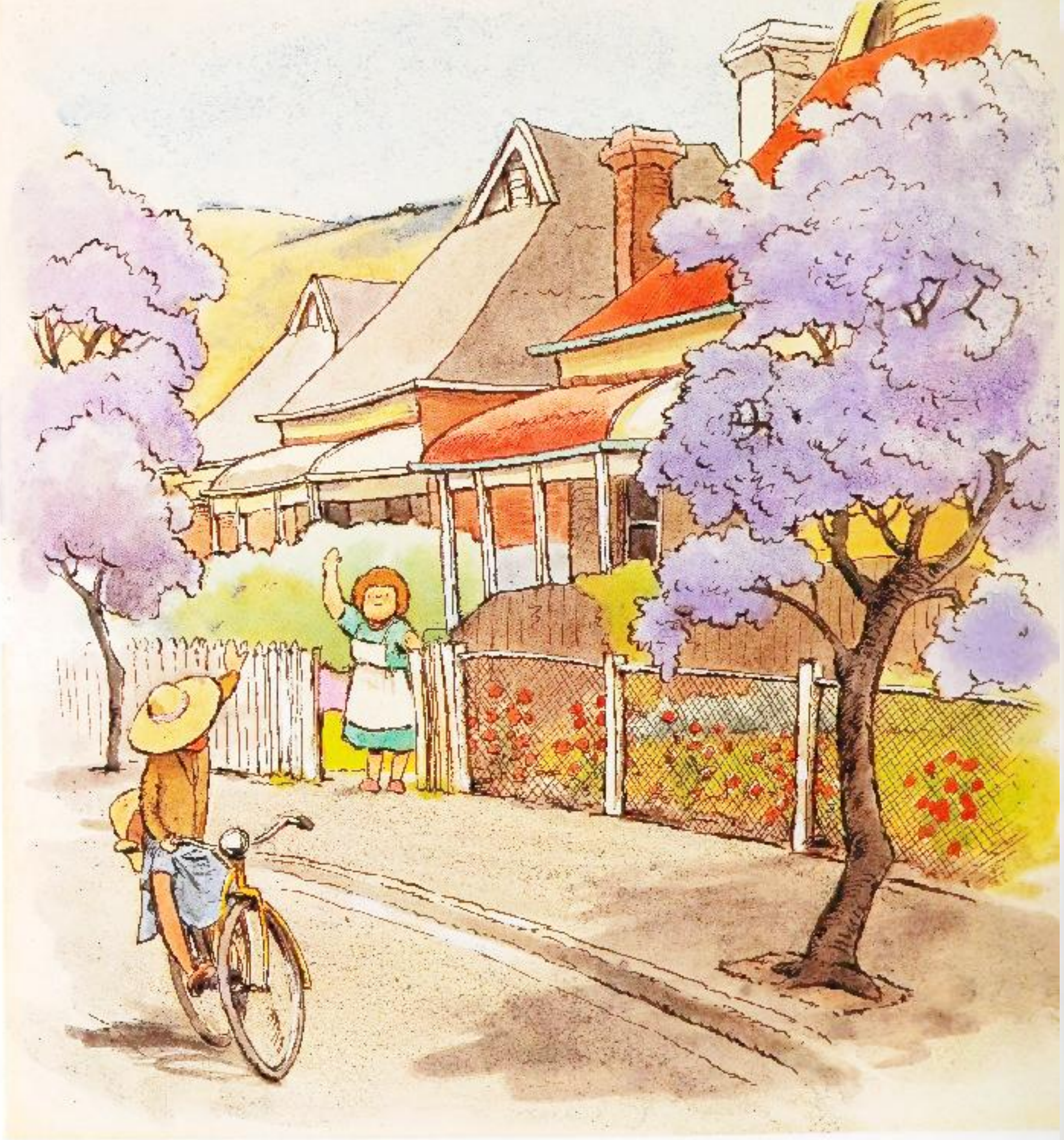
वह शरारती खुशी से
पानी भरे गड्ढों में दौड़ता-भागता रहा,
और जोर-जोर से चिल्लाता हुआ
हर तरफ छींटे उड़ाता रहा।

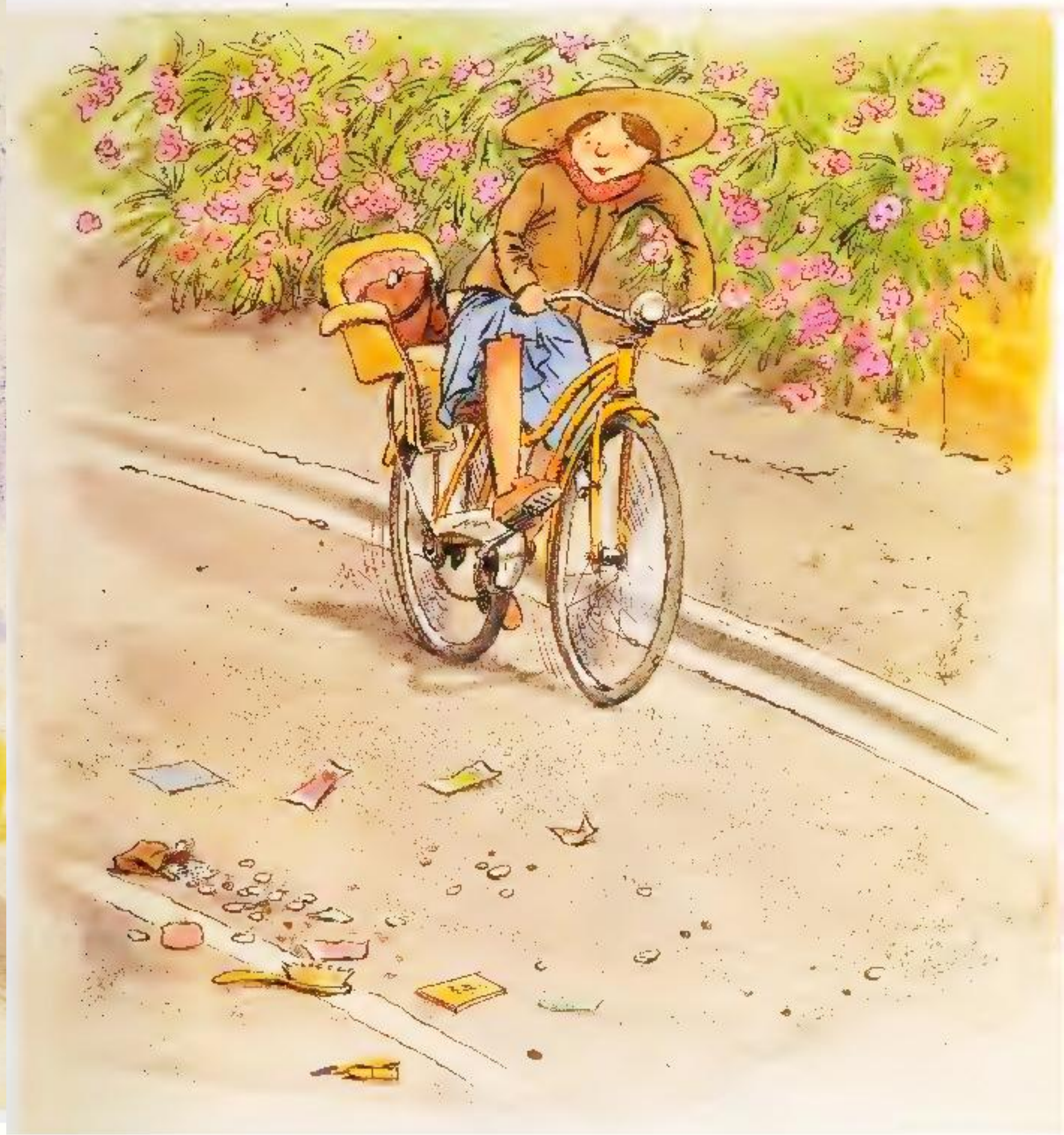


जब उसकी माँ फोन पर बात कर रही होती,
वह खिड़की पर चढ़ जाता,
और अकेले ही बाहर निकलकर
इधर-उधर घूमने चला जाता।



उसने सारी दीवारों पर
टमाटर सॉस और गोंद से चित्र बना दिए।
अरे, ऐसी कोई भयानक शरारत नहीं थी
जो डेविड ने न की हो!



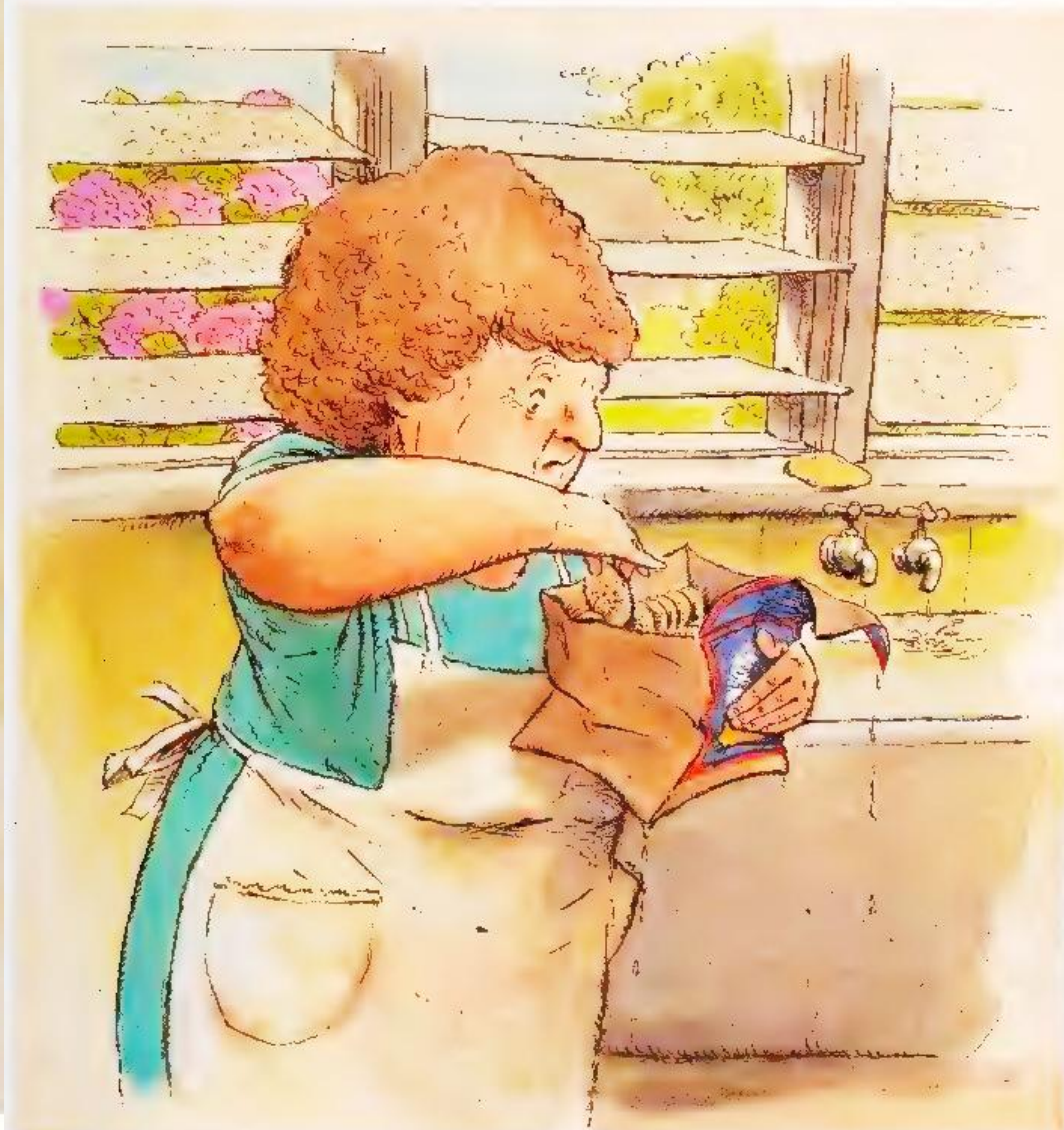


डेविड तो अपनी माँ को जाते हुए देखने तक नहीं रुका।

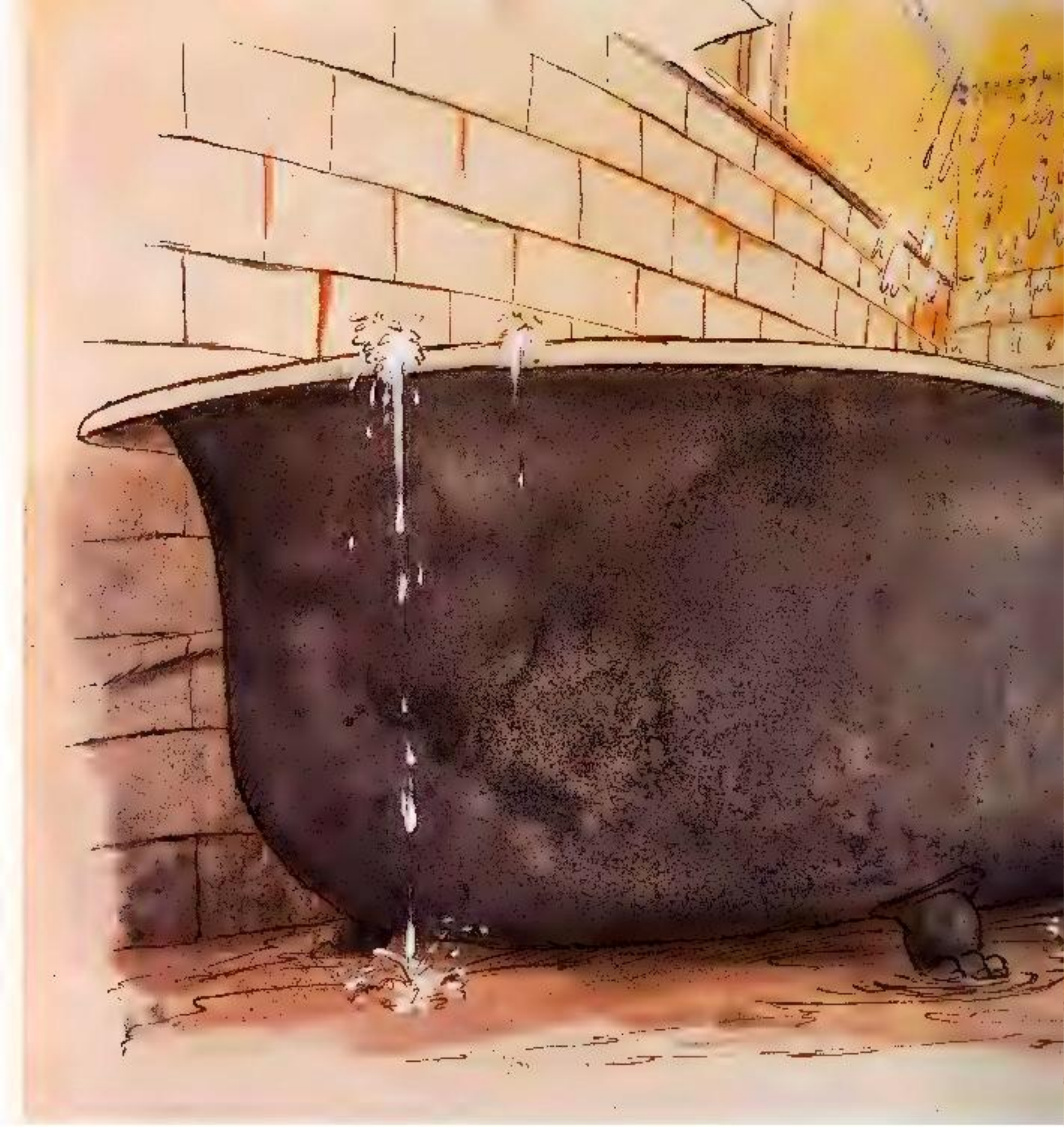
क्योंकि उसके पास पूरी दोपहर भर की शरारतें तैयार थीं।



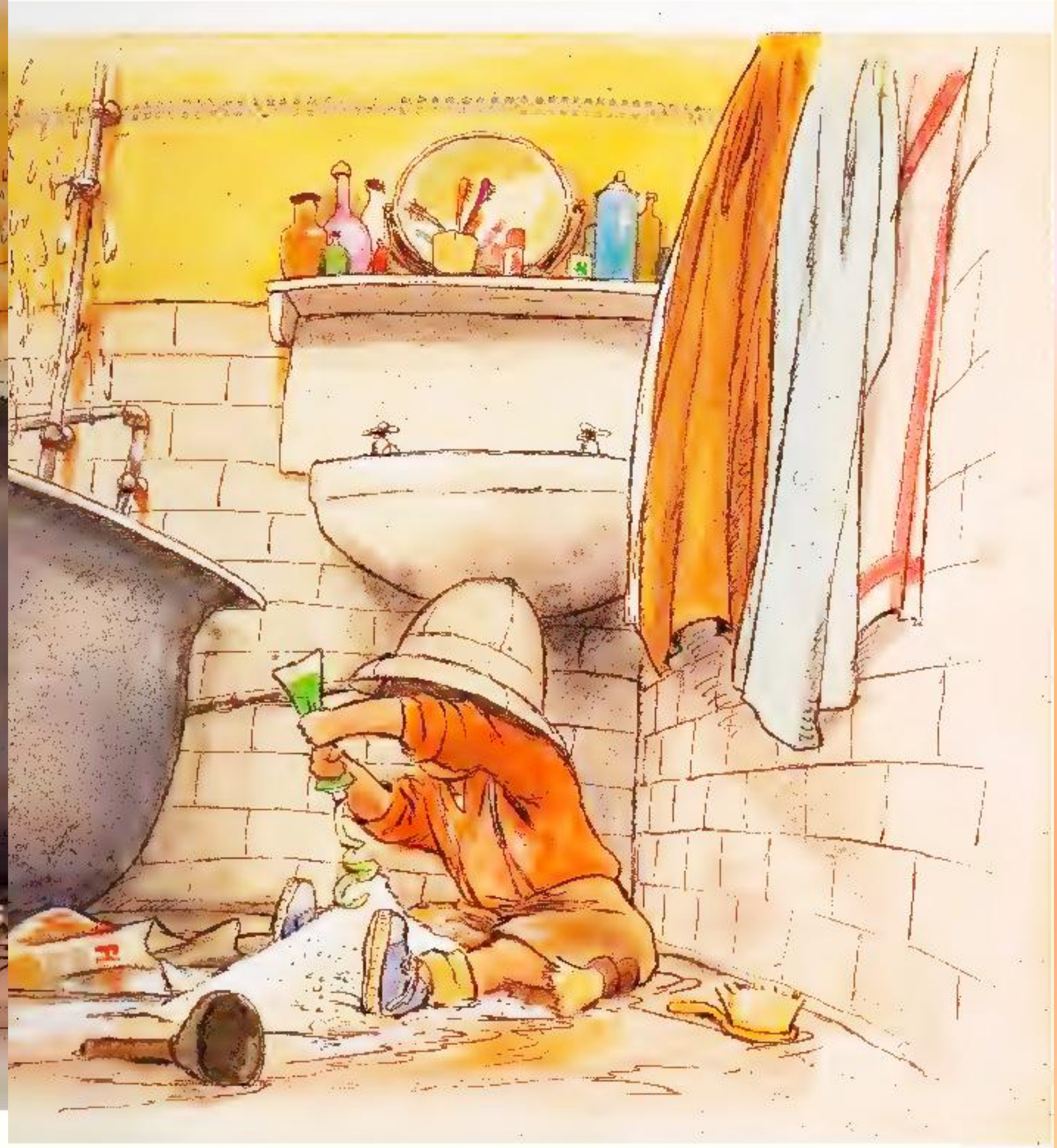
डेविड ने एक डिब्बे को नाव बनाया
और उसे पानी की टंकी में तैराया।



वह डिब्बा दादी का बिस्कुट रखने वाला डिब्बा था,
और सारे बिस्कुट नर्म हो गए!



वह एक किलो आटा लेकर बाथरूम में घुस गया।



उसने दादाजी की सारी शेविंग क्रीम इस्तेमाल कर डाली
और शॉवर का पानी बाहर तक बहा दिया।



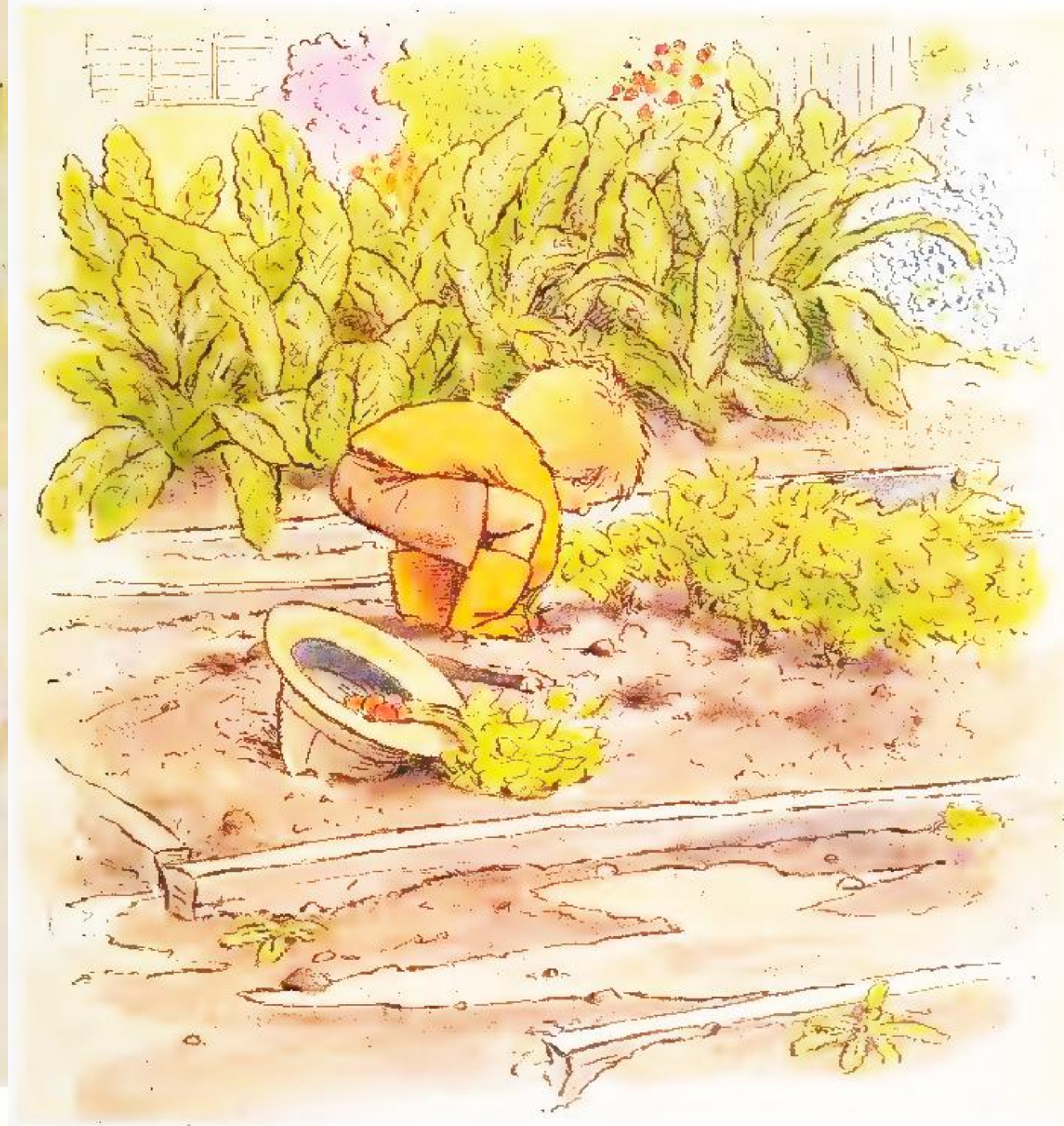
उसे टॉयलेट पेपर का नया बड़ा रोल मिला
और उसने उसे कमोड में बहा दिया।
अरे, ऐसी कोई भयानक शरारत नहीं थी
जो डेविड ने न की हो!



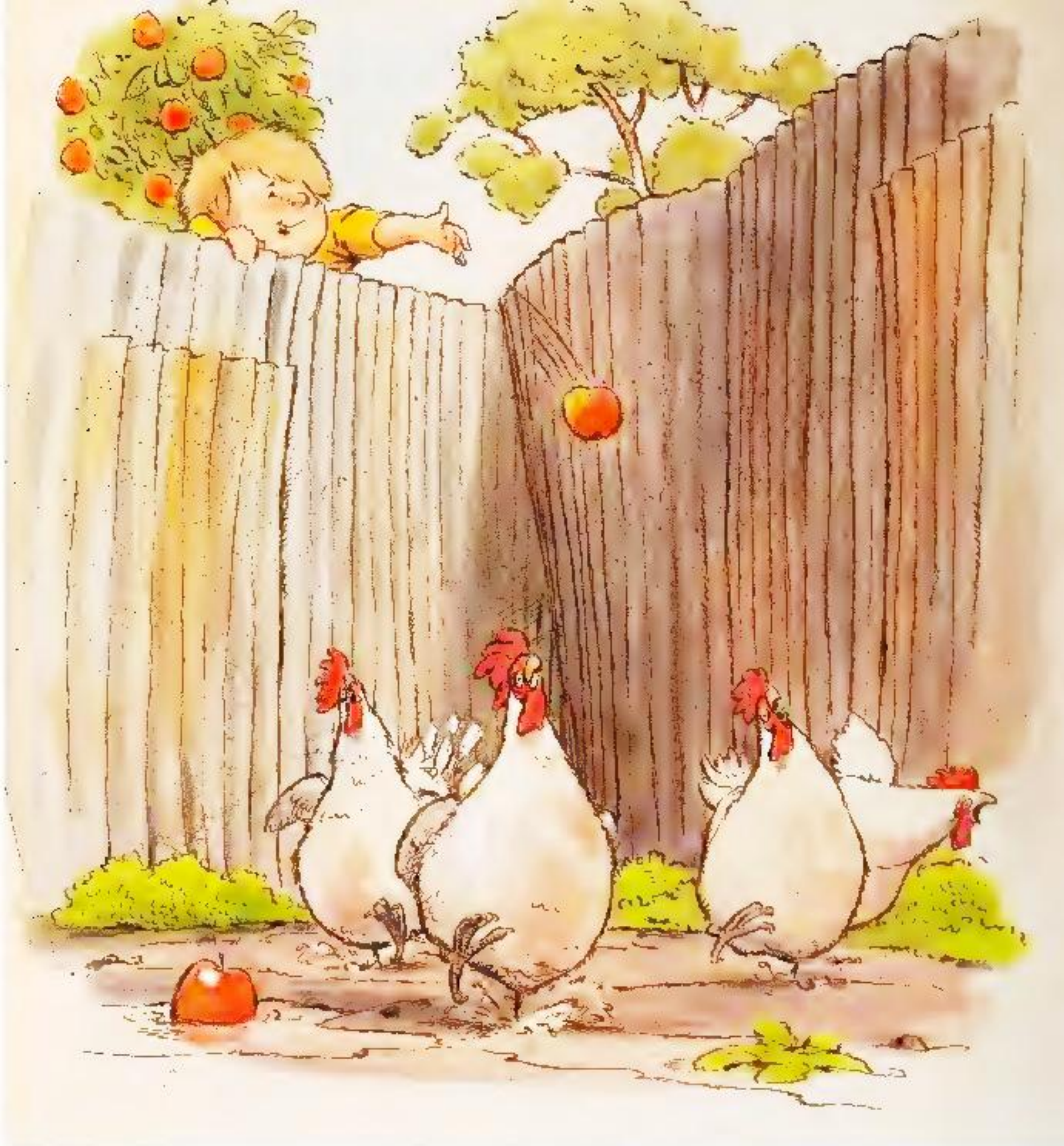
दादी की मुस्कान थोड़ी गायब हो गई
जब उन्होंने देखा कि उसने क्या किया है।
उन्होंने डेविड को साफ कपड़े पहनाए,
हालाँकि उसकी शरारतें अभी शुरू ही हुई थीं।



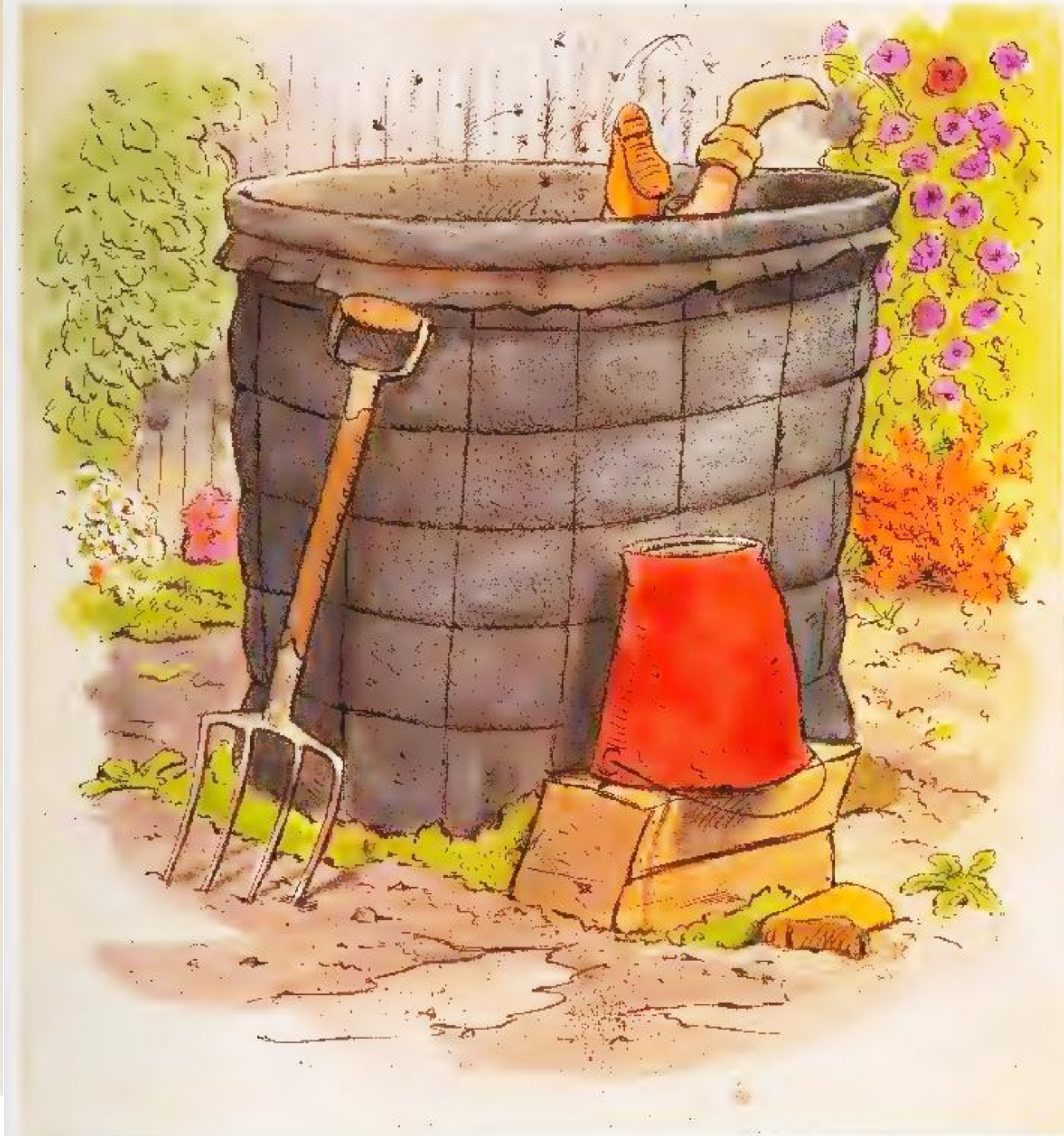
डेविड ने आधी गाजरें उखाड़ दीं
और चुकंदर की क्यारियों को रौंद डाला।



उसने सारी मूलियाँ उखाड़ लीं
ताकि नीचे क्या है, यह देख सके।



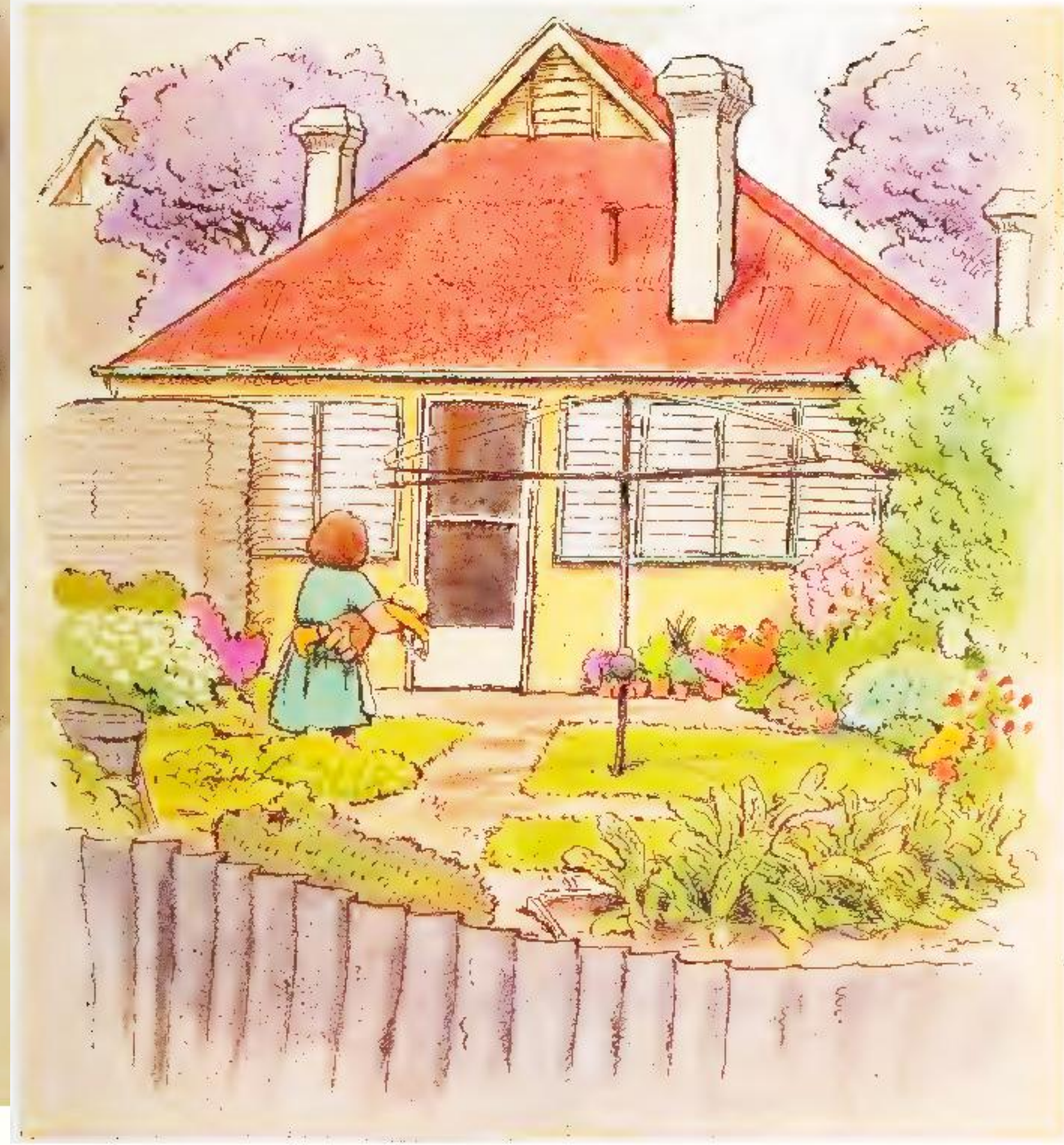
उसने मुर्गियों पर कुछ सेब फेंके
और फिर खाद के गड्ढे तक पहुँच गया।



क्योंकि वह आधा खाली था,
शरारती डेविड उसमें चढ़ गया।



वह बैठ गया और उसे कुछ ऐसा मिला
जिसमें सड़े अंडे जैसी गंध आ रही थी।
उसने उसे अपनी पीली कमीज़ पर मल लिया
और थोड़ा अपने सिर पर भी लगा लिया।



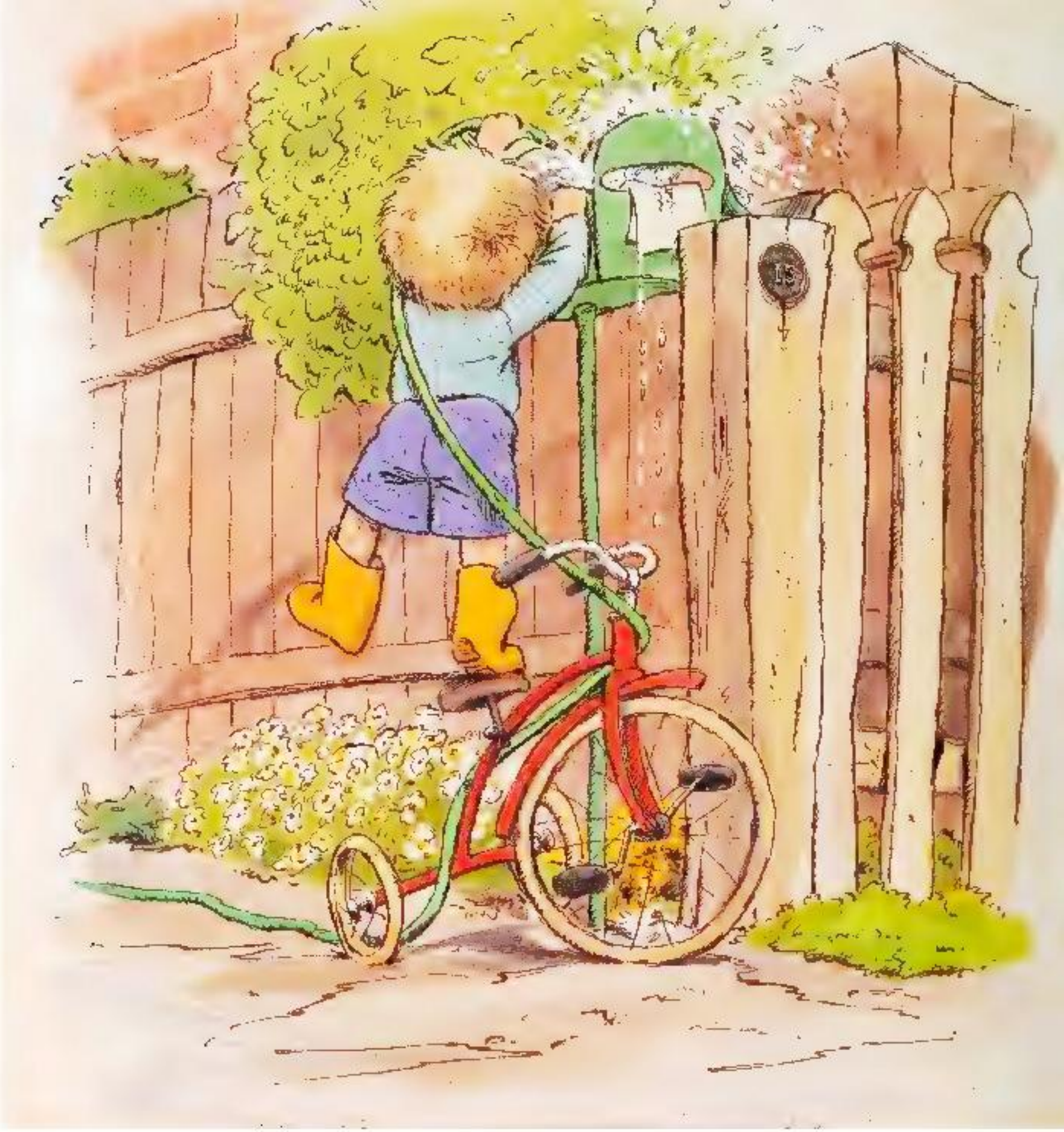
दादी की मुस्कान लगभग गायब हो गई
जब उन्होंने उसकी बदबू महसूस की।
उन्होंने फिर से डेविड को साफ कपड़े पहनाए,
हालाँकि उसकी शरारतें अभी शुरू ही हुई थीं।



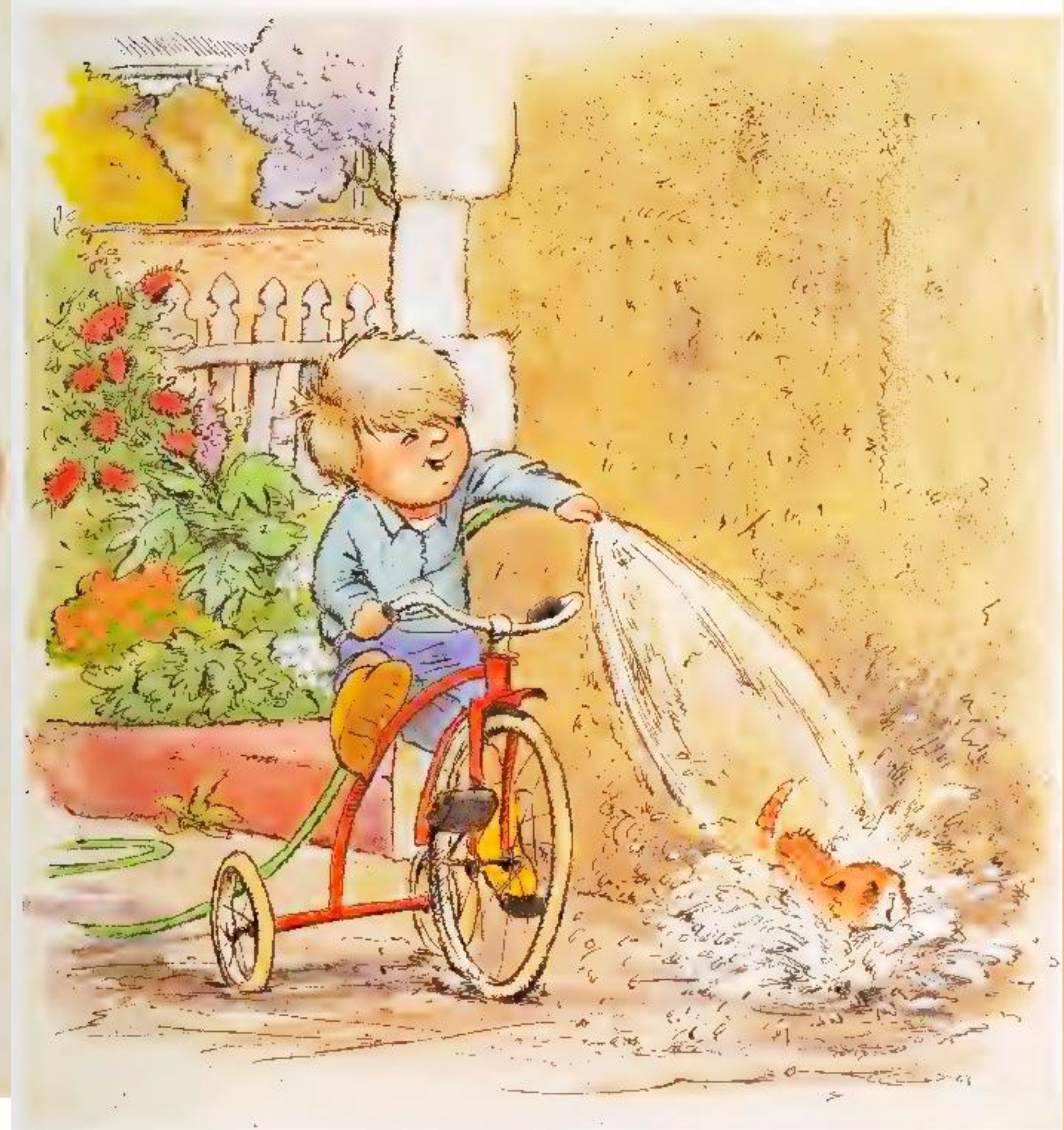
डेविड ने सारी सलाद पत्तियों को पानी दिया
(उसे पता था कि इससे पौधे बढ़ते हैं),
लेकिन जल्दी ही उसका मन ऊब गया
क्योंकि वे बहुत धीरे-धीरे बढ़ती थीं।



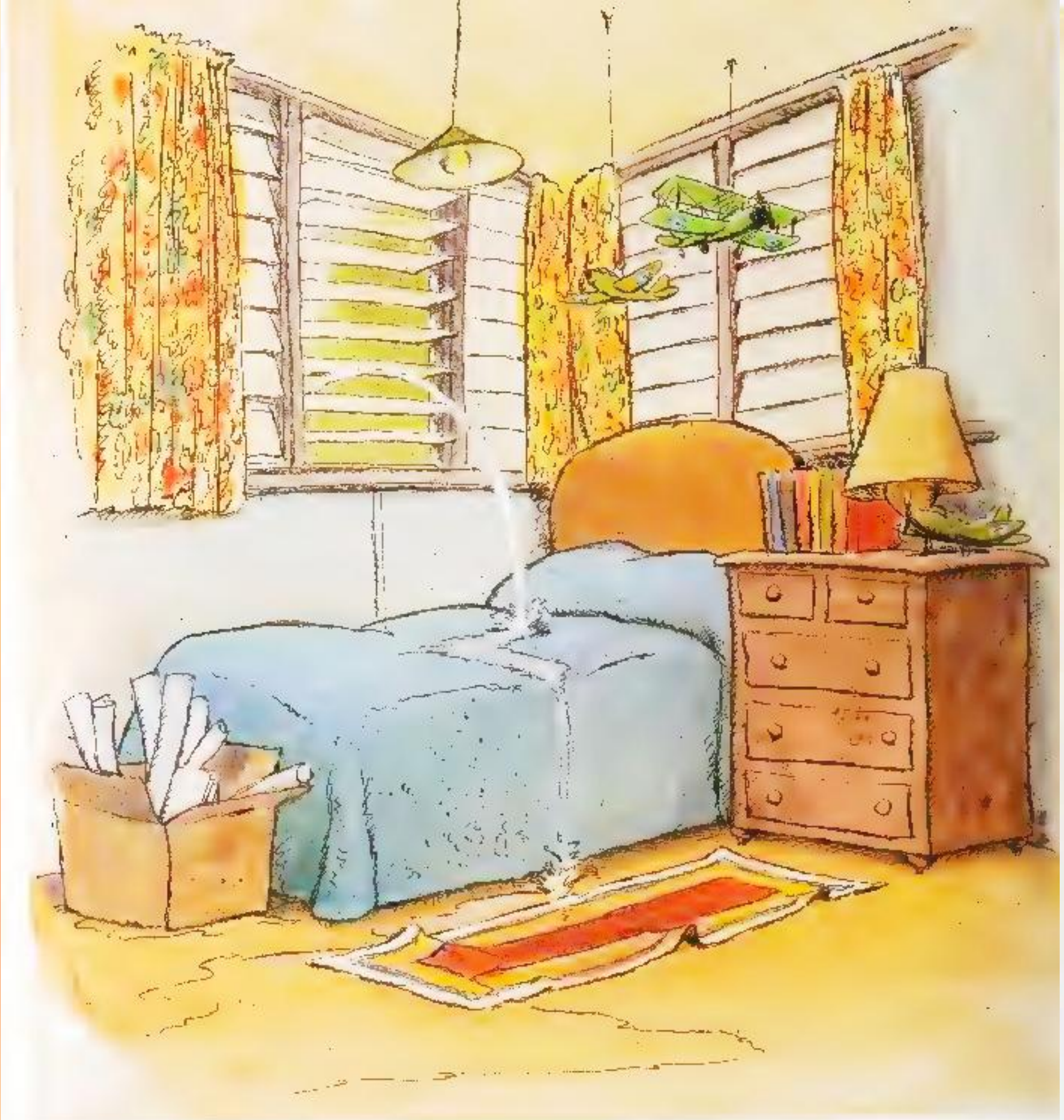
फिर उसने पत्र-पेटी को पानी देना शुरू कर दिया,
लेकिन वह भी कुछ खास नहीं बढ़ी।



उसे लगा कि लिफाफे सूखे दिख रहे हैं,
इसलिए उसने सारे पत्रों पर पानी डाल दिया।



उसने दादी के छोटे बिलौटे को भी पानी दिया,
क्योंकि वह उसे बहुत छोटा लगा।



उसने दादी के खाली बिस्तर पर भी पानी डाला,
लेकिन वह भी बिल्कुल नहीं बढ़ा।



दादी की मुस्कान लगभग खत्म हो चुकी थी
जब उन्होंने बिलौटे का भीगा हुआ फर छुआ।
और उनकी मुस्कान पूरी तरह गायब हो गई
जब डेविड ने उन पर भी पानी डाल दिया!



दादी ने डेविड को फिर से साफ कपड़े पहनाए
(अब उनके पास साफ कमीज़ें कम पड़ रही थीं)।



और फिर उन्होंने उसकी पिटाई कर दी।



डेविड ज़ोर-ज़ोर से रोने और चिल्लाने लगा।



और रोते-रोते आखिरकार सो गया।



और दादी, जिनकी मुस्कान लौट आई थी,
ने उसके गाल पर प्यार से चुंबन दिया।